प्रथम अध्याय

सूर्यबाला : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

सूर्यबाला : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साठोत्तर महिला साहित्यकारों में प्रमुखतम् स्थान प्राप्त करनेवाली सूर्यबाला जी आधुनिकता से युक्त साहित्य लिखती हैं। उनके साहित्य में एक नारी होने के कारण नारी की समस्याओं का अंकन अधिक मात्रा में दिखाई देता है। साथ ही नारी मन के अनेक पहलुओं को सूर्यबाला जी ने उजागर किया है। इसके साथ ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने अन्य महिला साहित्यकारों की तरह अन्य विधाओं में साहित्य रचना की है परंतु इन सबसे हटकर एक महत्वपूर्ण विधा उन्होंने चुनी और वह है व्यंग्य। इसके माध्यम से समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं पर उन्होंने करारी चोट की है। समाज की विडंबनाओं को एक अलग दृष्टि से देखा और उसे अपने एक खास अंदाज में व्यक्त किया है।

सूर्यबाला जी को मुख्य रूप से कहानीकार के नाते जाना जाता है। उन्होंने अलग-अलग विषयों को लेकर कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने कभी अपने अनुभवों के आधारपर कहानियाँ लिखीं तो कभी परिवेश से उपजे हुए कथानकों को चुना। इसी कारण उनकी सभी कहानियाँ यथार्थ से उपजी कहानियाँ मानी जाती हैं। इन कहानियों में पायी जानेवाली अनेकानेक विशेषताओं को देखने से पहले सूर्यबाला जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को परखना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि किसी के जीवन, परिवेश आदि के बारे में सही जानकारी हासिल किये बिना उसके साहित्य को सही-सही रूप में हम विश्लेषित नहीं कर पाते। वैसे भी हर एक संवेदनशील साहित्यकार अपने परिवेश एवं परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। इसी कारण सूर्यबाला जी के समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व को देखना बेहद आवश्यक हो जाता है।

सूर्यबाला जी के व्यक्तित्व को हमने निम्नलिखित विभागों में विभाजित करते हुए उसका विश्लेषण किया है।

1:1 व्यक्तित्व -

1:1:1 जन्म तथा बचपन -

"सूर्यबाला जी का जन्म 25 अक्तूबर, 1944 को वाराणसी में हुआ। वे कायस्थ परिवार में जन्मी।"[1] उनका पूरा नाम सूर्यबाला वीरप्रतापसिंह श्रीवास्तव है। उनका बचपन अत्यंत लाड़-प्यार में बीता।

पारिवारिक साधन-संपन्नता के कारण उन्हें कभी किसी के आगे मोहताज नहीं होना पड़ा। इसी कारण उनका व्यक्तित्व भी किसी के आगे झुकना पसंद नहीं करता। उनका पूरा बचपन वाराणसी में धार्मिक पवित्र स्थान के वातावरण में बीता।

1:1:2 माता-पिता -

सूर्यबाला जी के पिता वीरप्रतापसिंह श्रीवास्तव डिस्ट्रीक्ट इनस्पेक्टर ऑफ स्कूल थे। उनके पिताजी के कारण कोर्स में लगनेवाली सारी किताबें उनके घर में होती थी। उनकी माँ केशरकुमारी उर्दू और हिंदी की अध्येता थी। उनकी रूचि कलात्मक और साहित्यिक थी। इसी के साथ ही उनकी माँ कतरब्योंत करना अच्छी तरह जानती थी इसी कारण उन्होंने अपनी चारों बेटियों को एम्. ए., पीएच्.डी. कराया। अर्थाभाव उन्होंने अपनी बेटियों को महसूस नहीं होने दिया। इसके साथ ही उनके पिता शेरों-शायरी भी किया करते थे। उनके चार बहनें थी। जिनमें से वीरबाला जी भी उन्हीं की तरह प्रसिद्ध साहित्यकार रही।

1:1:3 शिक्षा - दीक्षा -

"सूर्यबाला जी की आरंभिक शिक्षा वाराणसी में हुई। उनकी समग्र शिक्षा वाराणसी में ही हुई। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से रीति साहित्य में पीएच्.डी. की।"[2] शिक्षा हासिल करते समय उन्होंने कड़ी मेहनत की जिसका फल उन्हें अच्छा मिला।

1:1:4 परिवार -

"सूर्यबाला जी के पति श्री. आर. के. लाल पहले सिंधिया स्टील नेव्हीगेशन में इंजिनियर थे।"[3] परंतु बाद में ग्लैक्सो लैबोरेटरीज थाना में इंजिनियरिंग मैनेजर के रूप में काम करना शुरू किया और अब वे सेवानिवृत्त हो चुके है। वे भी एक मेहनतकश और परिश्रमी इन्सान है। उन्होंने सूर्यबाला जी को निरंतर प्रोत्साहित किया। सूर्यबाला जी के दो बेटे अभिलाष, अनुराग और एक बेटी दिव्या है। उनका बड़ा बेटा अभिलाष हाँगकाँग में कम्प्युटर का काम कर रहा है। इससे पहले उसने अमरिका में इंजिनिअरिंग पूरी की है। और उनकी बेटी दिव्या बायोकेमिस्ट्री में पीएच्.डी. कर चुकी है। आज उनका परिवार अपने स्थायी निवास -ए -5, गार्डन अपार्टमेंट, गावंड बाग, वागले एस्टेट, ठाणा - 400 604, सुखी एवं समृद्ध है।

1:1:5 अर्थोपार्जन -

वैसे तो सूर्यबाला जी आजकल किसी भी प्रकार की नौकरी नहीं करती बल्कि सिर्फ साहित्य लेखन कार्य में जुटी हुई है परंतु उन्होने आरंभिक दिनों में बनारस विश्वविद्यालय, डिग्री कॉलेज में नौकरी की थी। जैसे ही उनके पति को ग्लैक्सो में नौकरी मिली, वैसे ही उन्होने पारिवारिक जिम्मेदारियों को संभालने के लिए नौकरी छोड़ दी। आजकल वे सिर्फ साहित्य लेखिका एवं गृहिणी के दायित्वों को निभा रही है।

1:1:6 बाह्य व्यक्तित्व -

सूर्यबाला जी को देखते ही भारतीय नारी का एक आदर्श रूप हमारे सामने आ जाता है। औसत कद, गोरा रंग, लंबा चेहरा, माथे पर बड़ी सी बिंदी, सीधी-सादी लेकिन ठीक से सँवरी साडी, सँवरे बाल, और प्रसन्न चेहरा यह उनके बाह्य व्यक्तित्व की विशेषताएँ कही जा सकती है।

1:1:7 आंतरिक व्यक्तित्व -

सूर्यबाला जी का आंतरिक व्यक्तित्व भी उनके बाह्य व्यक्तित्व के समान ही है। वे देखने से ही प्रसन्नचित्त दिखाई देती है। इसी से उनके व्यक्तित्व में अनेक विशेषताएँ होंगी इस बात का पता चल जाता है। सूर्यबाला जी के आंतरिक व्यक्तित्व में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई देती हैं -

1:1:7:1 मिलनसार -

सूर्यबाला जी में कुछ साहित्यकारों के समान गर्व की, अभिमान की भावना दिखाई नहीं देती। वे हर किसी के साथ उसी मिलनसारिता के साथ मिलती हैं। उन्हें हर किसी से मिल-जुलकर उनके साथ सुख-संवाद करने में आनंद मिलता है। वे उनके सुख-दु:ख की सहभागी बन जाती है। इससे उन्हें कभी-कभी कहानियों के कथानक भी मिल जाते हैं।

1:1:7:2 आतिथ्यशील -

एक भारतीय नारी होने के नाते प्राचीन उक्ति 'अतिथि देवो भव' को सूर्यबाला जी आतिथ्यशील नारी के रूप में हमारे सामने आती है। उनके घर में जानेवाले किसी भी व्यक्ति को वे खाली हाथ नहीं भेजती। उनके आतिथ्यशील व्यक्तित्व के कारण आनेवाला हर व्यक्ति उनके पास से प्रसन्न होकर ही बाहर निकलता है। किसी को भी वे देर तक रोक कर भी नहीं रखती हैं।

1:1:7:3 संवेदनशील -

सूर्यबाला जी संवेदनशील होने के कारण ही उन्हें आनेवाले हर अनुभवों को लेकर सूर्यबाला जी कहानियाँ लिख पाती हैं। उनकी कई कहानियों के आरंभ में उन्होंने इस बात को स्वीकार भी किया है कि ये उनका अपना अनुभव है। वैसे भी उनकी कहानियों में बताये गये सारे अनुभवों को उन्होंने आत्मकथात्मक शैली में ही लिखा गया हैं। इसी कारण हम सुर्यबालाजी को एक संवेदनाशील नारी कह सकते हैं।

1:1:7:4 भावुक -

जिस प्रकार सूर्यबाला जी संवेदनाशील है, उसी प्रकार वे भावुक भी है। उनकी भावुकता का परिचय भी उनकी कहानियों में ही मिल जाता है। जैसे उनकी 'सुखांतकी' कहानी उनका अपना अनुभव है। उसी प्रकार 'रहमदिल' भी। इन दोनों ही कहानियों में उनकी भावुकता का परिचय हमें मिल जाता है।

1:1:7:5 हँसमुख -

सूर्यबाला जी से जब भी कोई मिलने जाता है तो चाहे, कोई भी वक्त क्यों न हो या उनके काम में चाहे जितना खल्ल क्यों न पड़ता हो, वे चेहरे पर शिकन तक नहीं लाती। प्रसन्नचित्त होकर हँसमुख होकर ही वे उसके सामने चली जाती है। न बहानेबाजी से काम लेती है और न ही वे टाल देती है। उनके हँसमुख व्यक्तित्व से हर कोई प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ कुशलता से निभाते हुए वे अपने साहित्यिक को भी उचित न्याय देती है। इसी कारण उनका हँसमुख चेहरा देखकर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि जिस प्रकार सूर्यबाला जी का बाह्य व्यक्तित्व शांत, सौम्य स्निग्धता लिए हुए है, उसी प्रकार उनके आंतरिक व्यक्तित्व में भी विशेषताएँ पायी जाती हैं। आज-कल उनके अंतर्मन में अवसाद खामोशी छाया हुआ है क्योंकि वसंतपंचमी के दिन उनके पिता की मृत्यु हो चुकी है।

1:1:7:6 रूचियाँ -

"जाति से कायस्थ होने के बावजूद भी सूर्यबाला जी शुद्ध शाकाहारी है। उन्हें मध्यमार्ग का आहार पसंद है। उनकी महत्वपूर्ण रूचियाँ है - पढ़ना, शास्त्रीय संगीत सुनना, शास्त्रीय नृत्य देखना, नाटक देखना आदि। लेकिन इसके साथ ही उन्हें अपने लोगों के साथ बैठकर उनके सुख-दु:ख के बारे में बातें करना पसंद है और इसके साथ ही बूढ़े लोगों के साथ बातचीत कर उन्हें समझ लेना भी सूर्यबाला जी को अच्छा लगता है।"[4]

1:1:8 साहित्यिक प्रेरणा -

वैसे तो सूर्यबाला जी मानती है कि कोई भी लेखक किसी एक वस्तु या घटना से प्रेरणा प्राप्त नहीं करता। उसकी रूचि बचपन से ही विकसित होती जाती है। सूर्यबाला जी ने छटी कक्षा से साहित्य लिखने की शुरूवात की। आसपास घटित होनेवाली घटनाएँ, संपर्क में आनेवाले लोग आदि ने उन्हें प्रेरित किया। लेकिन उन्हें सबसे अधिक प्रेरणा घर से ही प्राप्त हुई। बचपन का माहौल, घर में ढ़ेर सारी किताबें, पिताजी के द्वारा की जानेवाली शेरों-शायरी, माँ की कलात्मक और साहित्यिक रूचियाँ आदि ने तो सूर्यबाला जी को प्रेरित किया ही परंतु साथ ही साथ उनकी बहन वीरबाला ने उन्हें अधिक प्रेरित किया जो स्वयं एक साहित्यकार है। उन्होंने सूर्यबाला जी को प्रेमचंद और सुदर्शन की कहानियाँ बतायी जिससे सूर्यबाला जी की रूचि साहित्य की ओर अधिक बढ़ गयी। डॉ. मधु संधु का कहना है कि "सूर्यबाला के साहित्यिक जीवन पर पिता की कवि प्रवृत्ति तथा बहनों के संगीत-साहित्य-प्रेम का विशेष प्रभाव पड़ा।"[5] उनकी प्रथम कहानी 'जीजी' अक्तूबर, 1972 में सारिका पत्रिका में प्रकाशित हुई।

1:1:9 पुरस्कार -

सूर्यबाला जी को उनकी साहित्य कृतियों के लिए उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई बार पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जा चुका है।

सितंबर 1996 में सूर्यबाला जी को 'प्रियदर्शनी पुरस्कार' से पुरस्कृत किया जा चुका है।

सूर्यबाला जी की कृति 'कात्यायनी संवाद' के लिए उन्हें घनश्यामदास सराफ पुरस्कार मिला है।

नागरी प्रचारिणी सभा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मुंबई विश्वविद्यालय आरोही संस्था, राष्ट्रीय कायस्थ सभा आदि के द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

1:1:10 यात्राएँ -

सूर्यबाला जी अपने पति श्री आर. के. लाल के साथ विदेश भ्रमण भी कर चूकी है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि पारिवारिक माहौल, परिवेश, परिस्थितियाँ, घटनाएँ आदि के द्वारा प्रेरणा प्राप्त कर चुकी सूर्यबाला जी आज उचित सम्मान को प्राप्त कर सिद्धहस्त लेखिकाओं की पंक्ति में जा बैठती है।

1:2 कृतित्व -

सूर्यबाला जी के जीवन परिचय, उनके व्यक्तित्व के पहलू आदि बातों को हम देख चुके हैं। इनसे प्रेरणा प्राप्त कर सूर्यबाला जी ने जो साहित्य रचना की, उसका परिचय संक्षेप में प्राप्त करना यहाँ अत्यंत आवश्यक हो जाता है। तभी हम उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर क्या असर पड़ा इसका सही मूल्यांकन कर सकेंगे। सूर्यबाला जी ने अपने साहित्य का आरंभ छटी कक्षा से और कविताओं से ही किया। लेकिन वे मानती है कि तब उन्हें ठीक से लिखना भी नहीं आता था और इसी कारण उनकी यह कविता 'तुकबंदी' ही बन गयी। उसके पश्चात् उनकी प्रथम कहानी 'जीजी' सन् 1972 में सारिका पत्रिका में छपी और मार्च 1973 में उनका पहला व्यंग्य लेख 'अविभाष्य' धर्मयुग पत्रिका में छपा। शायद सूर्यबाला जी अन्य विधाओं की तुलना में व्यंग्य विधा को चुनती है इसका एक कारण यह है कि परिस्थितियों की विडंबना को अत्यंत हल्के ढ़ंग से वे पाठकों के सम्मुख रखना चाहती है। सूर्यबाला जी के रचना संसार को हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं -

1:2:1 उपन्यास -

हालाकिं सूर्यबाला जी को उनके उपन्यासों के कारण अधिक पहचाना नहीं जाता परंतु फिर भी साहित्यिक रचनाक्रम में उनके उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होते हैं। उन्होने चार उपन्यास लिखें - मेरे संधिपत्र, सुबह के इंतजार तक, अग्निपंखी, दीक्षांत। सूर्यबाला जी के इन चारों उपन्यासों का संक्षेप में परिचय निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है -

1:2:1:1 मेरे संधिपत्र -

सन् 1977 में प्रकाशित उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में नायिका शिवा के व्यक्तित्व को केंद्र में रखा गया है। उसका विवाह एक संपन्न विधुर रायजदा से होता है। इस उपन्यास में शिवा का त्याग उसकी शिष्टता एवं निरीहता का अंकन हुआ है। उच्चवर्गीय परिवार में द्वितीय माँ बनकर शिवा आती है, जहाँ उसे तीन पुत्रियाँ विरासत में मिलती है। उसे कदम-कदम पर समझौते करने पड़ते हैं। शिवा के खालीपन और अकेलेपन को गहराने के लिए रिंकी, ऋचा और रत्ना पूरा प्रयत्न करती है, लेकिन वह निपट अकेली रह जाती है। इस तरह पति-पत्नी के संबंध में तनाव स्थिति बनी रहती है। पिता और पुत्रियों में दो पीढ़ियों के अंतर को भी अंकित किया गया है। शिवा की दृष्टि में जीवन संधियों का एक अटूट सिलसिला है। उसे हर कदम पर समझौता करना

पडता है। तीन पुत्रियों की सौतेली माँ विधवा हो जाती है और उसका घुटन-भरा जीवन उसे कचोटता है। अंत में उसका हिम-पिंड पिघलने लगता है और वह नया जीवन जीने के लिए छटपटाने लगती है। पुत्रियों के चले जाने पर वह रत्नेश को अपने आपको समर्पित अवश्य करती है किंतु विवाह नहीं करती और अपनी कोठी में अकेली रह जाती है। डॉ. सरिता कुमार इस उपन्यास के बारे में कहती है - "उपन्यास का अंत विचित्र रूप में किया गया है - पति घर से बाहर चला जाता है और पत्नी ममता के बंधनों को तोडकर अकेली खडी रह जाती है। सूर्यबाला ने घरेलू धरातलपर पापा, मम्मी, अंकल और लडकियों के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता में द्वंद्व की स्थिति को उजागर करने का यत्न किया है कि किस तरह घर के कडे अनुशासन में प्रेम कुंठित होने की साक्षी देता है।"[6]

1:2:1:2 सुबह के इंतजार तक -

सन् 1980 में प्रकाशित 'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास में परिस्थिति जन्य दुर्घटनाओं के बीच एक नारी की करूणा भरी गाथा है। स्वालंबन जिजीविषा ओर अनवरत अथक परिश्रम की स्थिति से युक्त मानू की कथा न जाने कितनी किशोरियों की कथा है।

आज का मध्यवर्ग दु:खी है। अभिशप्त है सही किंतु इस मध्यवर्ग में जो पारंपारिक रूप से कुलीन है। वे अपने अभावों की छाया भी किसी पर नहीं पडने देते। डॉ. शीलप्रभा वर्मा जी का कहना है - "सुर्यबाला जी ने शैली में सरसता, अभिव्यक्ति में नविनता, आदात्म्य की सीमा रेखाओं को स्पर्श करते हुए सभी में एक प्रकार का नया तेवर लेकर उपन्यास जगत में कदम रखा है। अनेक पात्र ग्रार्हस्थ और दांपत्य जीवन की सीमा रेखाओं के बीच घूमता है।"[7]

1:2:1:3 अग्निपंखी - अप्राप्य

1:2:1:4 दीक्षांत -

सूर्यबाला जी के चतुर्थ उपन्यास दीक्षांत में शिक्षा क्षेत्र को अपना केंद्रिय विषय बनाया गया है और उसके अंदर चलनेवाले भ्रष्टाचार को उन्होंने अत्यंत मार्मिकढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास पर समीक्षक डॉ. मदनमोहन तरूण टिप्पणि करते हैं - "शिक्षण संस्थाओं में शिक्षेतर शक्तियों के निरंतर बढ़ते प्रभाव, अन्य व्यावसायिक संस्थानों जैसा ही मूल्यविरहित वातारण, साधना, अध्यवसाय तथा उच्चादर्शों के कठिन मार्ग से जीवन का परिष्कार करते हुए एवं अधीत विषयों पर अधिकार के स्थान पर शीघ्रति शीघ्र सफलता की होड़ा होड़ी में

मूल्यों एवं ज्ञानसाधना के प्रति समर्पित अध्यापकों का निरंतर घटता प्रभाव, उनके भीतर गहराती निराशा एवं वातावरण में अपनी आवश्यकता की तीव्रानुभूति ही इस उपन्यास का मुख्य विषय है। 'दीक्षांत' की मर्मस्पर्शी यातना-कथा स्वाधीनता संग्राम के त्याग एवं कर्तव्यों के प्रति निष्काम समर्पण के मूल्यों से प्रेरित एक ग्रामीण विद्यालय के आदर्शनिष्ठ अध्यापक के पुत्र डॉ. विद्याभूषण शर्मा के माध्यम से कही गयी है।"[8] इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा क्षेत्र पर करारी चोट इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने की है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चार अलग-अलग विषयों पर उपन्यास लिखकर सूर्यबाला जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

1:2:2 कहानी संग्रह -

वैसे तो कहानीकार के नाते साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध होनेवाली सूर्यबाला जी ने सात कहानी संग्रह लिखे हैं - 1) एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम 2) दिशाहीन 3) थाली भर चांद 4) मुंडेर पर 5) यामिनी कथा 6) गृह प्रवेश 7) साँझवाती। लेकिन इनमें से प्रथम दो कहानीसंग्रह - एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम और दिशाहीन अप्राप्य है। इनके अलावा जो पाँच कहानी संग्रह उपलब्ध है उनका परिचय निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है -

1:2:2:1 थाली भर चाँद -

सन् 1988 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में कुल 16 कहानियाँ संकलित है। इस कहानी संग्रह की विशेषता यह है कि इस कहानी संग्रह की कहानियों के आरंभ में प्रस्तावना के रूप में इन कहानियों के संदर्भ में लेखिका ने अपना विचार प्रकट किया है। इन कहानियों के बारे में यह भी बताया जा सकता है कि इनमें से अधिकतर कहानियाँ नारी जीवन से संबंधित है। अर्थात् पारिवारिक कहानियाँ है।

1:2:2:2 मुंडेर पर -

सन् 1990 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ संकलित की गयी है। सूर्यबाला जी इन कहानियों में पारिवारिक जीवन से थोड़ा-सा बाहर आयी हुई दिखाई देती है। तभी तो उन्होंने गैस, मुक्तिपर्व जैसी कहानियाँ लिखी लेकिन फिर भी पूरी तरह से वे पारिवारिक माहौल से अलग नहीं हो पायी।

1:2:2:3 यामिनी कथा -

सन् 1991 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में सिर्फ तीन ही कहानियाँ संकलित की गयी है - 'यामिनी कथा', 'मानसी' और 'मटियाला तीतर'। इनमें से 'यामिनी कथा' यह कहानी लघु उपन्यास के समान है। वैसे तो तीनों ही कथाएँ पारिवारिक माहौल को ही प्रदर्शित करती है परंतु तीनों का वातावरण अलग-अलग है। 'यामिनी-कथा' कहानी में एक नारी के अंतर्मन को खोलकर रख दिया है तो 'मानसी' में अतीत के पलों को याद करनेवाले और वर्तमानपर उसे थोपने का प्रयास करनेवाले प्रोफेसर की व्यथा अंकित है। जबकि मटियाला-तीतर में घर में नौकरों की स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। इसी कारण उनका यह कहानी संग्रह अपना एक अलग महत्व रखता है।

1:2:2:4 गृह प्रवेश -

आज तक के कहानी संग्रहों से अलग सूर्यबाला जी का यह कहानी संग्रह सन् 1992 में प्रकाशित है। इस कहानी संग्रह में 11 कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों में विघटन, आतंक और हताशा के बीच जी पाने की कोशिश और जी लेने की कला की प्रतिष्ठापना की गयी है। साथ ही आधुनिक काल में मनुष्य के भावनात्मक रिश्तें किस प्रकार सिमटते चले आ रहे हैं, इसे अंकित किया गया है।

1:2:2:5 साँझवाती -

सूर्यबाला जी का यह अंतिम कहानी संग्रह सन् 1995 में प्रकाशित है। इस कहानी संग्रह में भी ग्यारह कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों में करूणा और विद्रूप की तीखी धार दिखाई देती है। जीवन मोह के साथ अवसादी वैराग्य, गाँव से शहर तक के हर वर्ग और हर द्वंदंव की धड़कन सुनानेवाली इन कहानियों में जीवन की विषमताओं का अंकन किया गया है।

इस प्रकार इन कहानी संग्रहों की कुल 51 कहानियों में अनुभव संचित ज्ञान, यथार्थवाद आदि बातें दिखाई देती है जो सूर्यबाला जी की कहानियों की विशेषता है। इन कहानियों को व्यंग्य की तीखी धार भी कहीं दिखाई देती है।

1:2:3 व्यंग्य संग्रह -

सूर्यबाला जी के व्यंग्य संग्रह दो है - (1) अजगर करे न चाकरी (प्रकाशित) (2) अगली सदी का शोधपत्र (प्रकाश्य)। इनका हम निम्नलिखित रूप में अलग-अलग परिचय प्राप्त कर सकते है।

1:2:3:1 अजगर करे न चाकरी -

सूर्यबाला का बहुचर्चित व्यंग्य संकलन 'अजगर करे न चाकरी' व्यंग्य की धारदार क्षमता और संभावनाओं का अनुभव और अभिव्यक्ति के धरातल पर सकेंद्रित करता है। इसमें 47 रचनाएँ एकत्र हैं, जो पूर्व चर्चित है, लेकिन इससे प्रमुख संकलन में बासीपन और क्षणभंगुरता जैसे तत्त्व समाविष्ट नहीं हुए हैं। इस संकलन के बारे में डॉ. बापूराव देसाई का कहना है कि - "संकलनों में प्रस्तुत उनकी कुछ विशिष्ट रचनाएँ जो चुहल, विनोद और मीठी मसखरी से भरपूर होते हुए भी सर्वत्र धारदार व्यंग्य से तराशी हुई है। इन व्यंग्य रचनाओं की पैनी छुरी की मार से आज के समाज और साहित्य का कोई वर्ग, कोई पक्ष बच नहीं पाया है। तथा कथित, बुद्धिजीवियों का पूरा हुजूम विद्यार्थी और अध्यापक नेता और अभिनेता से लेकर संयोजक,समीक्षक, संपादक और लेखक, कवि तथा पति तो खैर हैं ही लेकिन सबसे पहले है लेखिका स्वयं, पहला निशाना खुद अपने आप पर साधती है ।"[9] डॉ. देसाई का कहना सार्थक लगता है।

'अजगर करे न चाकरी' में संकलित व्यंग्यों में कला और साहित्य, फिल्म और संस्कृति, देश सेवा और पत्रकारिता, जन नेता और बुद्धिजीवी, क्रिकेट और प्रेम, शिक्षा और सम्मेलन, गधों और कुत्तों आदि की व्यापक परिक्रमा के आधार पर हिंदी के व्यंग्य लेखन का एक प्रतिमानिक जायजा उपलब्ध है।

डॉ. सूर्यबाला के व्यंग्य की विषय सामग्री समाज के हर क्षेत्र का प्रतिबिंब है। महँगाई, दहेज, रिश्वतखोरी, शोषण, धार्मिक पाखंड, सांप्रदायिकता, अन्याय के विविध रूप सूर्यबाला के समग्र व्यंग्य में परिलक्षित है।

1:2:3:2 अगली सदी का शोधपत्र - (प्रकाश्य)

"सूर्यबाला के व्यंग्य' इस लेख में श्यामसुंदर घोष ने लिखा है - "सूर्यबाला की कहानियों में जैसे उनका व्यंग्य छिपा चलता है वैसे ही उनके व्यंग्य में कहानियाँ दबे पाँव साथ लगी चलती है। इसलिए सूर्यबाला के व्यंग्य वैसे निखालिस व्यंग्य नहीं है जैसे कि हिंदी के अन्य व्यंग्यकारों के व्यंग्य हैं। उनके व्यंग्य

लेखन में विविध प्रकार के पात्रों की जैसी जमघट है उसकी कल्पना आप अन्य व्यंग्यकारों के संदर्भ में नहीं कर सकते।"[10]

1:2:4 अन्य साहित्य -

सूर्यबाला जी के अनेकानेक लेख, कहानियाँ कई पत्रिकाओं में छप चुकी है। इसके अलावा उन्होंने स्तंभ लेखन का कार्य भी किया है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि सूर्यबाला जी ने सिर्फ किसी एक ही विधा को साहित्य के लिए नहीं चुना बल्कि उन्होंने एक-साथ अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया और उस क्षेत्र में अपना नाम ऊँचा कर दिया।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक काल की अग्रगण्य महिला साहित्यकार सूर्यबाला जी जिन्होंने अपने बचपन से ही साहित्य लिखना शुरू किया था आज साहित्याकाश में एक सफल कहानीकार के नाते जानी जाती है। बचपन में पारिवारिक माहौल ही कुछ ऐसा था कि उन्हें साहित्य लिखने की प्रेरणा मिली। अर्थाभाव से गुजरते हुए भी शिक्षा को उन्होंने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिया और उच्च शिक्षा हासिल की। माता, पिता, बहन आदि से प्रेरणा प्राप्त करने के बाद पति ने भी उन्हें काफी सहयोग दिया और बच्चों ने भी।

इसी कारण उन्होंने पत्नी या माता को अपने साहित्यकार पर हावी नहीं होने दिया। अपने अनुभवों से ही साहित्य लेखन के लिए विषय चुने। अपने मन की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें कथा का क्षेत्र ही बहुत अच्छा लगा इसी कारण कथा साहित्य को उन्होंने चुना।

बचपन के माहौल, जीवन में घटित घटनाएँ, अनुभव, परिस्थितियाँ आदि से प्रेरणा प्राप्त की और साहित्यसृजन किया इसी कारण शायद उनका साहित्य यथार्थ से युक्त बन गया। जीवन की विडंबनाओं पर खुलकर हँसपाने के लिए ही शायद उन्होंने साहित्य के लिए व्यंग्य को विधा के रूप में अपनाया। लेकिन फिर भी

उन्हें एक सफल कहानीकार के रूप में ही अधिक पहचाना जाता है। कहानियाँ चाहे एक डेढ़ पन्ने की हो या लंबी हो पाठक को पूरी तरह से बाँधे रखती है। इसी कारण जो पुरस्कार उन्हें मिल चुके हैं वे उचित ही है।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि जीवन की घटनाओं का, परिवेश का, परिस्थितियों का काफी हद तक असर सूर्यबाला जी के अपने साहित्य पर पड़ा हुआ है जो कि एक संवेदनशील साहित्यकार के लिए उचित ही है।

1. परिशिष्ट 1 से उधृत, पृष्ट . 115

2. वही, पृष्ट . 115

3. डॉ. मधु संधु - साठोत्तर महिला कहानीकार, पृष्ट . 104

4. परिशिष्ट 1 से उधृत, पृष्ट . 115

5. डॉ. मधु संधु - साठोत्तर महिला कहानीकार, पृष्ठ . 104

6. सरिताकुमार - महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप - विकास, पृष्ठ . 206

7. डॉ. शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृष्ठ . 40

8. संपा. वि. सा. विद्यालंकार - 'प्रकर', अप्रैल 1995, पृष्ठ . 27

9. डॉ. बापूराव देसाई - हिंदी व्यंग्य एवं व्यंग्यकार, पृष्ठ . 100

10. संपा. गोपालराय, 'समीक्षा,' अप्रैल 1991, पृष्ठ. 46